Journal Homepage: www.ijrpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 07, pp 264-270, July 2025

पूर्व माध्यमिक आवासीय विद्यालय में दक्षता वृद्धि हेतु सुझाव

[1]श्रीमती वैष्णवी शुक्ला, [2]डॉ० सुरेन्द्र कुमार त्रिपाठी

[1]विषय शिक्षा शास्त्र (शोधार्थी), ए.पी. एस. विश्वविद्यालय , रीवा, मध्य प्रदेश।
[2]प्राध्यापक, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, (म०प्र०)।

संक्षेपिका

स्वामी दयानंद सरस्वती के उपनिषद के दर्शन से उत्पन्न शैक्षिक विचार, प्राच्य वेद ज्ञान से निष्यंदित, शिक्षा का वह सार तत्व है, जो भारत की नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को निर्धारित करता है। पूर्व माध्यमिक आवासीय बालिका विद्यालय की छात्राओं की आत्मिक अभिप्रेरणा, स्व–अनुशासन निर्देशित पाठ्यचर्या, शाश्वत एवं सनातन मूल्यो की सुसंस्कारिक शिक्षा के केंद्र में, मनोरुचि, साम्यवादी चिंतन पर गुणवत्तापरक शिक्षा ,समग्र विकास, श्सर्वांगीण एवं पूर्ण चौतन्य मानवतावादी उपागमश के निमित्त जीवन कौशल के बहुविधि दक्षता के संवर्धन हेतु नवाचारी शिक्षा को ग्रहण करवाते हुए शत–प्रतिशत, नामांकन, ठहराव उपलब्धियां एवं परिणामों को सुनिश्चित करता है। एक जागरूक चिंतन के परिवेश में श्शुभ परिणामश तक छात्राओं को लाने हेतु इनके व्यावहारिक रूपांतरण, अंतर्निहित गुणों का परिमार्जन, पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण की दैनिक गतिविधियों के साथ शिक्षा में नवजात उपकरणीय प्रौद्योगिकी के ढंग विशेष के अनुप्रायोगिक व अभ्यासगम्यता, में मानव की शिक्षा तथा संस्कृति की समझ का विकास किया जा सकता है। संस्कार विज्ञान की आदर्शमई प्रवृत्ति को सामान्य शिक्षा हेतु प्रयोजनीय विशिष्ट शिक्षा है जो औचित्यपूर्ण ढंग से विद्यालय में श्सेतु कार्य नीतिश, सुधारात्मकता के समानांतर जीवन के अवकाश का सदुपयोग करने की सीख का समागम स्थल आवासीय विद्यालय तंत्र की परिस्थिति का निर्माण, सृजनशील किए जाने की संभावताओं में डिजिटल दक्षता एवं वित्तीय साक्षरता को प्रदान कर सकता है। जो शत–प्रतिशत विषय नामांकन की धारणीयता, उपलब्धि एवं भावी परिणाम का प्रभाव सत्र 2040 ई० तक संभावित है, इसकी कार्यान्विति का आरंभ सत्र 2030 ई० से प्रारंभ होगा। शोध प्रतिफल के पूर्ण होने की संभावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का सन 2045 ई० तक पूर्णरूपेण संप्राप्ति संभव हो सकेगी। पांच वर्षांतराल के पृष्ठ पोषण में जेंडर सोच का प्रभाव शून्य होने पर ही कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों का प्रवेश नामांकन एवं उपलब्धि परिणाम शत–प्रतिशत प्राप्त होकर क्षमता और समानता को बालिका शिक्षा प्राप्त कर सकती है। अस्तु, इस प्रकार समाज की मुख्य धारा में, छात्राओं की सामान्य शिक्षा सम्मान रूप में शिक्षा सम्मिलित हो पाएगी।

कुंजी शब्द रू– शिक्षा, आवासीय शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, संभावताएं, मानवता, संस्कार, नवाचार

प्रस्तावना–

भारत के विद्यालयों में नवीकरणीय अशोधित परिशोधन संस्कारों से चारित्रीकरण, स्त्री प्रवृत्ति के अनुसार, गृहस्थ घुमंतू अनामांकित बालिकाओं हेतु आवासीय रूप में अनौपचारिक तथा गतिविधिक कार्यक्रमों द्वारा जीवन एवं समाज के सरोकारो के संबद्ध करते हुए, पूर्ण अनुशासनीयता से स्वानुशासन में परिणिती समीचीन है। आश्रम शिक्षा पद्धति के हेतु पूर्व माध्यमिक आवासीय शिक्षा छात्राओं (11 – 14 वर्ष) के लिए कक्षा 6 – 8, तथा कतिपय संस्थाओं में आवासीय उच्चीकरण एवं माध्यमिक शिक्षा का कार्यान्वयन आरंभ है।

पृष्ठभूमि–

भारत के उत्तरी भाग में विस्तृत उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ परियोजना के माध्यम में निर्देशित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में पूर्व माध्यमिक और माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण विविध नवाचारों द्वारा सुधारात्मक रणनीति के विकास हेतु प्रयागराज मंडल में निहित प्रतापगढ़ के 15 विकास खण्डों में छात्राओं के एकत्व मनोवृति हेतु श बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओश की शिक्षा नीति के स्थान पर बेटी बचाओ के स्थान पर बेटी अपनाओ पढ़ाओ और बढ़ाओ को सशक्त किया जाना चाहिए अर्थात् बेटियों की स्वीकार्यता, आत्मिक रूप से अनिवार्य हो, प्रति 10 किलोमीटर की परिधि में पूर्व माध्यमिक आवासीय बालिका शिक्षा हेतु स्वयं के उत्थान हेतु मानवतावादी शिक्षाधिकार को जीवन के अधिकार के सापेक्ष प्राप्त करना आवश्यक होगा। श्प्रसन्नता का समान स्तर तक आत्म संतुष्टि की व्यापक पहुंच के हेतु रचनात्मक चयन, सीख ज्ञान व कौशल की सुविधाओं का भारत की तृतीय नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुविषयी, बहुआयामी, बहुविध पक्षों का मूलभूत साक्षरता से लेकर 16 – 14 वर्ष आयु की छात्राओं की निशुल्क शिक्षा, डिजिटल साक्षरता व्यवस्थापन का अपवंचित समूह की शिक्षार्थ के निमित्त सर्वोत्तम विकल्प का प्रस्तावक है।श 5 उत्तर प्रदेश के 746 कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका संस्था के रूप में, सर्व शिक्षा अभियान के प्रावधानों को संयुक्त करते हुए ,जेंडर अंतराल की रिक्तियां की आपूर्ति के लिए समाज की मुख्य धारा में बालिका शिक्षा विशिष्ट का सीखने में सहजीकरण एवं सहभागिता को सुनियोजित किया गया है। पाठ्यक्रम को समस्तरीय समझ तक के विकास हेतु 3 वर्षीय आवासीय धारणीयता के द्वारा छात्राओं की नकारात्मक अभिवृत्तियों

का निराकरणीय प्रयासों की वरीयता निर्धारित की गई। श्सही सोच में सही करनेश के चयन के पक्ष में पूर्वाग्रही धारणा के विरुद्ध श सहज स्वभाव के हेतुश प्राच्य सांस्कृतिक मूल्यों के अधिष्ठान पर संस्कारिक आवासीय शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा, एवं शिक्षा में मूल्य का होना, मानव जीवन के परिवर्तन हेतु प्रासंगिक है।

भारत की शिक्षा नीति 2020 में पूर्व माध्यमिक आवासीय बालिका विद्यालय में शिक्षा (11 से 14 वर्ष) की आयु में प्राच्य शिक्षा के पुनरावलोकन के बाद वास्तविक, नैदानिक कठिनाइयों की जांच के बाद, ग्रामांचल की बालिका शिक्षा हेतु लगभग 35ः आवासीय स्थिरता में विचलन है। 6 स्वामी दयानंद सरस्वती का श्सम्यक– समग्र–आत्मिक दर्शनश, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के मानकों में, भारतीय शिक्षा की एक सर्वश्रेष्ठ पहल है। सार्वभौमिक शिक्षा में आधुनिक बोर्डिंग विद्यालय, प्राचीन काल की गुरुकुल शिक्षा पद्धति का व्यावहारिक एवं परिवर्त्य प्रारूप है। व्याकरण शास्त्र का हस्तांतरण, डिजिटलीकरण के द्वारा, प्राच्य गैपध्उपास्य विधि का आधुनिक सूचना – संचार प्रणालियों को सहायक रूप में दक्ष अनुप्रयोग से कौशल दक्षता की प्राप्यता संभव है। वैदिक सार तत्वों का शिक्षा नीतियों में भावात्मक लागत की आनंददाई क्रिया के द्वारा अधिगम का लक्ष्य है– भारतीय शिक्षा का उदारीकरण एवं यंत्रीकृत आधुनिकीकरण की प्रवीणतम् उपलब्धि।

शोध का उद्देश्य –

भारत में सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत छात्राओं की शिक्षा तक पहुंच के हेतु स्त्री पूर्णकालीन शिक्षिका, निशुल्क पाठ्य पुस्तक, गणवेश, शौचालय संवेदीकृत तथा आवश्यक चिकित्सीय सामग्रीयों का वितरण किया जाता है। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत बालिका छात्रावहन उपचार , उपचारात्मक कक्षाएं, सामूहिक कक्षाएं, गतिविधि आधारित जागरूकता शिविर व रैली, मंचन, बाल सभा आरोहणी आदि के द्वारा बालिकाओं की नकारात्मकता का सकारात्मक रूपांतरण किया जा सकता है जिससे सर्वांगीण एवं पूर्ण व समग्र विकास संभव हो सके। 18(4)

- स्वावलंबी छात्राओं को स्व स्तंभित करना।
- शिक्षा को धारणीय तथा नवाचारी आयाम देना।
- उच्चसामर्थ्य क्षमता को दक्षता एवं कौशल को आनंददाई क्रिया बनाना।
- अवसरों में समता समानता को रचनात्मक रूप देना।
- भाषागत संचार का विकास करना।
- छात्राओं के आत्म बल को बढ़ाना।

'त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी।

त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः ॥7

अर्थात् आत्म की उन्नति के विकास को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्त्री – पुरुष, किशोर– किशोरी, युवक– युवती को भेद रहित सत्य ज्ञान को विश्व की शिक्षा योजना, यूनिसेफ के वित्त से सुनिश्चित सहायता प्रदान करती है। स्वामी जी पूर्ण विकास हेतु आध्यात्मिक जागृति, आत्म संतुष्टि, अंतरिक शांति एवं सद्भाव आदि गुणों का वैदिक बिगुल है।

शोध प्रविधि –

मौलिक चिंतन का गुणात्मक शोध शैक्षिक समस्याओं का समाधान हेतु सुझावात्मक नीतियों को प्रस्तुत करता है। विषय वस्तु – विश्लेषण विवेचना के अंतर्गत गहन ऐतिहासिक प्रशोधन विषय वस्तु के विविध सूचनाओं, को साहित्यसार, विश्लेषण, अनुभाविक संश्लेषण विधि के द्वारा उपचारात्मक शिक्षा का प्रतिनिधित्व करता है।

- सर्वेक्षण विधि द्वारा यथार्थ स्थिति ज्ञातव्य।
- छात्र के प्रवेशार्थ आम सहमति की सूची।
- केस स्टडी विधि।
- प्रगतिशील वार्षिक समीक्षा, आंतरिक सतत मूल्यांकन
- छात्रों की वैयक्ति घरेलू समस्याओं का संकलन (17)

- तात्कालिक समाधान हेतु क्रियात्मक प्रयोग।

अंतर्वस्तु, विश्लेषणविधि से प्राप्त शब्दार्थ तथा भाव की सटीक सकारात्मक सोच का शोध समस्या से संबंधित अवगत होने के बाद यथावत् वर्णन विधि, आख्या के साथ सर्वेक्षक सर्वेक्षण से प्राप्त सूचना से, तुलनात्मक विधि से प्राप्त अंतर के हेतु, सुझाव अन्वेषण एवं क्रियान्विती वांछनीय है।

खोज–

भारत में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत ग्रामीण पिछड़े क्षेत्रों से प्राप्त रिक्तियों हेतु शिक्षा विशिष्ट में वास्तविक कर्म के आकलन के लिए पूर्व उपलब्धि की प्राप्ति दुष्कर है। 35ः आवासीय उपलब्धियां में 15ः वास्तविक कमियों मनोवैज्ञानिक एवं यथार्थ कार्यान्वयन में बाधाएं हैं।

- राजनैतिक, कूटनीतिज्ञता य
- स्वामी जी का आत्मिक दर्शन विभेद रहित श्मानव शिक्षाश का सोपान है।
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ में प्रतिवर्ष 5 करोड़ से उत्तर प्रदेश में सत्र 2024– 25 ई० में 19 करोड़ के लगभग बजट प्रावधानित है।
- लिंगानुपात के आधार पर 100 निर्दिष्ट जिलों में 5 लाख रुपए प्रतिवर्ष प्रदान करने के योग्य है।
- प्रतिवर्ष जिला स्तरीय पुरस्कार एवं उत्कृष्ट विद्यालयों के संचालन हेतु प्रदान हेतु सुनिश्चित हुआ।
- स्कूल प्रबंधन समिति को एक लाख रूपए का पुरस्कार सुनिश्चित है – जिनका 100ः नामांकन के साथ छात्राओं की उपस्थिति की धारणीयता हो।
- अज्ञानता की रिक्तियां पाटना, बालिका शिक्षा की आयोजना के दायित्वों की संप्राप्ति करना।

प्राप्तियां–

- जेंडर सोच एक पूर्वाग्रही (पूर्वाग्रही) भ्रामक धारणा मात्र है।
- घरेलू हिंसा यौन उत्पीड़न ,यौन हिंसा, भ्रूण हत्या
- शिक्षा के प्रति रुझान में कमी।
- शिक्षारू एक सोच का अभाव
- पुरुषों का एकाधिकार सत्तावादिता निर्णयन का दुष्प्रभाव बनाम शोषण व अमानवीयता।
- बालिका शिक्षा हेतु श एकमात्र घरेलू दायित्वश की संकीर्ण मानसिकता।
- चारित्रिक द्वैतवादिता की मनोवृत्ति।
- के.जी.बी.वी विद्यालयों की औसत उपस्थिति 65ः है।8
- आदिवासी क्षेत्र में ड्रॉपआउट (अनामांकित)की अधिक संख्या।

परिणाम –

उत्तर प्रदेश के छात्रावासीय विद्यालयों की छात्राओं की देखभाल से लेकर उपचारात्मक शिक्षादान, सुरक्षा के संदर्भ में स्वानुशासन का प्रयास विशिष्ट है। परिवर्धित शिक्षा, सांकेतिक भाषाओं की सीख, कुशलक्षेम संबंधी सर्वेक्षण से अभिभावकों में जागरूकता दिखी, छात्रों की वास्तविक अनुपस्थिति 15 है, पांच छात्राएं आवागमन 10ः अनुपस्थित, परीक्षाकाल में भी एकमात्र नियमित है।

- भारत की नवीन शिक्षा नीति एवं स्वामी दयानंद सरस्वती के वैदिक विचारों से उत्पन्न शैक्षिक विचारों में साम्यता।
- भारत की सही समझ पर ज्ञान संवर्धन तथा विकास की संभाविताओं का होना।

- कस्तूरबा गांधी आवासीय पूर्व माध्यमिक छात्राओं का शिक्षानुशासन, शिक्षा की जीवनपर्यंत आदत तथा दिनचर्या में शिक्षा की संस्कारिक शिक्षा में समानांतर है।
- कस्तूरबा गांधी विद्यालय की पर्यावरणीय शिक्षा में सृजनकारी पहल।
- शिक्षण पद्धतियों एवं अधिगम प्रौद्योगिकी में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है।
- बौद्धिक संपदा अधिकार शिक्षा में प्रौद्योगिकीकरण सहज नवाचारीकरण में वृद्धि हुई है।
- गुरुकुल रूपी आवासीय शिक्षा में डिजिटलीकरण की प्रारंभिक द्रुतगामी प्रयोगधर्मिता आई।
- उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों से छात्रों की सोच में परिवर्तन से विवेकपूर्ण अंतर्दृष्टि का विकास प्राप्य हुआ।

महत्व–

शिक्षा में छात्र केंद्रित, अनुवांशिक गुणों की धारणीयता, सामूहिक चेतनाओं का अनुप्रयोग एवं निशुल्क शिक्षा के द्वारा बालिका शिक्षा की व्यावसायिक लक्ष्य के निर्धारण में सहायता ,अक्षर ज्ञान प्रणाली, नवाचारी उपकरणीय आयामो द्वारा प्रत्यालिपिक अधिकार के अंतर्निहित शाश्वत ज्ञान परंपरा का हस्तांतरण, सहज हो गया है। भारत की बालिका शिक्षा, विदेश की तुलना में बेहतर सुधरी स्थिति में है, क्योंकि एक सफल जीवन हेतु शिक्षित स्त्री के द्वारा परिवार से लेकर प्रबुद्ध समाज का विकास एवं निर्माण होता है।

- योग्यता की धारणीयता।
- मनोवृतिक अंतराल का पाटनध्भराव।
- भाषा विज्ञान की अभियांत्रिकी का ज्ञान।
- बौद्धिक संपदा के संवर्धन एवं निवेश में स्त्री शिक्षा की संबंधित सहभागिता।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राच्य ज्ञान की आधुनिक भूमिका।

वर्तमान प्रासंगिक डिजिटलीकरण, प्रौद्योगिकी की समझ, व्यावसायिक प्रशिक्षण, गतिविधिक ,सांस्कृतिक कार्यक्रम, सेवा भाव, श्रमदान रैलियों, अभियानों ,के माध्यम से आनुभाविक तथा स्वानुभव के द्वारा प्राप्त जागृत व सक्रिय ज्ञान, छात्रों के जीवन कौशल, प्रवीनतम कुशलता की प्राप्ति आनुभाविक कार्यों के क्रियान्विती को शिक्षा के माध्यम से सहजीकृत कर सकेगाय साथ ही एकीकृत शिक्षा को सार्वभौमिकता की प्राप्ति रखवाएगा।

शैक्षिक निहितार्थ–

भारत की शिक्षा का भारतीय करण शिक्षा का एकीकरण, समसदभाव विभेदरहित

समता – समानता युक्त शिक्षा में साम्यता,विश्व बंधुत्व के उत्कृष्ट मूल्यो के अनंतिम लक्ष्य के शरणागत उपेक्षित बालिका से स्त्री शिक्षा में छात्राओं को स्व स्थिति से ऊपर उठाने वाली शैक्षिक रणनीति हेतु शिक्षा की योजना अत्यावश्यक है। शोधार्थी ने पाया कि विद्यालय, संस्कारिक विशिष्ट वेद सारभाव का शिक्षा नीति में अशुद्धि अनुप्रयोग छात्राओं की सुषुप्त शैक्षिक चेतना को पुनः जागृत करके करने, हेतु मानवीयता का स्थान सुदृढ़ कर सकता है।

- वेद सार का शिक्षा नीतियों में अनुप्रयोग, सफल जीवन का प्रदायक है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती, के चौतन्य मानक के द्वारा मानवता का पोषण, शिक्षादर्शन का आत्मिक तत्व है।
- छात्रों की सतत शिक्षा हेतु अपवंचित वर्ग की शिक्षा व्यवस्था जीवन कौशल के विकास से श जेंडर अंतरालश में कमी हो पाएगी।
- आवासीय शिक्षा की नियमित सारणी से अनुपालित जीवन में स्वानुशासन महत्वपूर्ण भाग हो सकेगा।
- अपवंचित वर्ग की छात्राओं का उद्धार संभव साक्षरता से राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अपार सम्भाविताओं के द्वार खुलेंगे।

- प्राच्य सर्वोत्कृष्ट भाषा विज्ञान ,स्वामी जी का संपूर्ण विज्ञान है, जिसे विदेशो में यूनिसेक्स (न्छैप्म्) कहा गया है।
- छात्राओं के शीलगुण में मानवोचित् की धारणीयता महत्वपूर्ण है।
- पूर्व माध्यमिक आवासीय बालिका विद्यालय, छात्रों को दक्षता कौशल प्रदायक, व्यावहारिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण आयाम है।
- पर्यावरणीय शिक्षा, संरक्षण की शिक्षा में नवीन अभिवृत्ति का विकास, वातावरणीय सौंदर्य का सृजन हेतु विशेष पहल है।
- अनौपचारिक शिक्षा में वैदिक संपदा अधिकार निष्क्रिय एवं मौन है परंतु डिजिटल प्रयोग के संदर्भ में अभ्यासगम्य कार्य नीति हेतु प्राथमिक व प्रारंभिक ज्ञान प्रदान कर सकता है।
- छात्रों की मनोवैज्ञानिक रूप से विज्ञान व तकनीकी में सहभागिता बढ़ाएगा, जो समाज की मुख्य धारा की शिक्षा में छात्राओं को सम्मिलित कर पाने में सक्षम होगा।
- उत्कृष्ट मानव मूल्यों का शिक्षा, में प्रवेश से छात्रों की शिक्षा, संस्कारिक शिक्षा के माध्यम से मानव सभ्यता की प्रारंभिक पहल है।
- आवासीय विद्यालय की शैक्षिक पद्धतियों में नवाचार अनुशासित कौशल ज्ञान की प्राप्ति में सहायक है।
- पूर्व माध्यमिक आवासीय बालिका विद्यालय, संरक्षण व सर्वोत्तम शिक्षा का विकल्प है।
- अपवंचित वर्ग की छात्राओं की साक्षरता और शिक्षा का सामान्यीकरणोंन्मुखता का विषय है।
- शिक्षा में भाषा विज्ञान का, नवीन शिक्षा नीति 2020 में अशोधित प्रभाव, बालिका शिक्षा पर शब्दावली की सूझ में सहायक है।
- स्वच्छता की आदत का विकास।

निष्कर्ष–

भारत में पूर्व माध्यमिक आवासीय छात्राओं की शिक्षा पद्धति का अनन्तिम लक्ष्य प्रसन्नता एवं आनंदमय क्रियानुभूति के साथ योग्यता दक्षता के भावी शिखरतम संभाविताओं को सुनिश्चित करते हुए जीवन पर्यंत शिक्षक के अधिकार को एक मानक में अनुबंधित कर सकते हैं। एक विदुषी स्त्री की रचना दुर्लभ कार्य है। समाज की प्रतिनिधित्वकारी भूमिका में रचनात्मक कौशल, अति सूक्ष्मतम् भाषागत सीख, नव्यतर ज्ञान , मितव्यई तथा अभीष्ट, नियोजित अनुप्रयोग द्वारा सतत विकास संभव हो सकेगा। भव्य व दिव्य परंपरागत, व्यावहारिक ज्ञान, एक भाव सामूहिक लक्ष्य हेतु ब्रहमचर्य जीवन द्वारा पोषित आवासीय बालिका शिक्षा की उचित क्रियान्वयन ही श्शुभश है। वेदसार रूपी सांसारिक विद्या ही अमृत है, जिसका प्राकृतिक समन्वयन ही श साधुवाद' है। इस हेतु नवाचारी प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण अनिवार्य हो चुके हैं। प्रधान निष्कर्ष निम्नवत है –

- मानवोचित अभिवृत्ति हेतु ब्रह्मचर्य आवश्यक है।
- वेदज्ञान संपूर्ण जीवन का सार एवं प्रयोगधर्मिता है।
- सर्वहितरता भारत की एकीकृत शिक्षा है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती का संपूर्ण – सम्यक् – आत्मिक दर्शन है।
- जीवन पर्यंत शिक्षा की आदत का प्रायोजित, आत्मसातीकरण संभव है।
- पूर्व माध्यमिक आवासीय छात्राओं में सुधार की अनंत संभावनाएं हैं।
- असामान्य शिक्षावंचनक , अनामांकित छात्राओं को सामान्य रूप से समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सकेगा।
- समकालीन नवीन शैक्षिक प्रवृत्तियों को नवोन्मेषी प्रौद्योगिक प्रोत्साहित करेगा।
- पर्यावरण, जनसंख्या शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा को अनुकूलित किया जा सकता है।

सुझाव–

प्रतापगढ़ के विकास खण्डों में, सत्र 2020 ई० के पूर्व उत्तर प्रदेश में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय की छात्रों की औसत उपस्थिति 65ः से 85ः रही। किंतु 2019 ई० के अंत में कोविड काल का आरंभिक समय स्व संगरोध की समयावधि में ड्रॉपआउट छात्राओं की सफलताएं पुनश्च शून्य स्तर पर आया, विभागीय निर्देश में मात्र 50ः छात्राओ की उपस्थिति कोविड बचाव के मानको के साथ अनुमतिमन्य हुई। सामाजिक विश्वास के मापदंडों पर पूर्ण दुष्कर अभ्यास का प्रभाव आरंभ किया गया, सबसे बड़ी चुनौती और प्रासंगिकता डिजिटलीकरण कि पिछड़े क्षेत्रों में बालिका शिक्षा के संदर्भ की रही, जिस विषय पर अभिभावकों को समझाना और उनकी पुत्री की शिक्षा हेतु आम सहमति की प्राप्ति ही कठिन है। जिसमें ऑनलाइन 40ः छात्राएं संबंधित थी, जो दीक्षा ऐप पर प्राप्त पाठ्यक्रम हेतु सुलभ रही और 60ः पूर्व छात्राएं शिक्षा से असंबद्ध रही। ऑनलाइन कक्षाओं की 40ः छात्रों को भी येनकेन प्रकारेण मोबाइल की कक्षाएं समयानुसरित नियमित होना भी संदिग्ध रहा है, वास्तविक अनुमान 20 अर्थात् 50ः ही सफल रूप में ऑनलाइन कक्षाओं के प्रति सतर्क गंभीर एवं कार्यशील रही। शेष 20 छात्राएं व्हाट्सएप कक्षाएं, प्राप्यता में असमर्थ रही जिसके पृष्ठीय कारण में मोबाइल घर पर तो है, परंतु कारण विशेष अथवा जेंडर सोच प्रभावित, बाधा थी। इस धरती को स्वर्ग बनाओ, बिटिया को सँवारो,पढ़ाओ और सबल बनाओ, बिटिया के जन्म का उत्सव मनाओ, पढ़ा लिखा कर उसे काबिल बनाओ।9

समाज की मुख्य भूमिका की प्रतिनिधित्वकारी निर्वहन की योग्यतम उत्तरजीविता को बालिका शिक्षा की भागीदारी को बढ़ाना महत्वपूर्ण है। सामान्य लक्षणोन्मुखी गुरुकुल के समान छात्रों की आवासीय शिक्षा, आधुनिकीकृत बोर्डिंग, संस्कारिक एवं अनौपचारिक, सुरक्षात्मक आवरण में रचनात्मक परिशिष्ट का अनुभव है। शिक्षा से वंचित छात्राओं का संपूर्ण शशिक्षा एक सोचश, एक विचार पद्धति की लेखन पठन की अनवरत आदत का जीवनचर्या में सम्मिलित करने का सर्वोत्तम विकल्प कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय है।

शून्य स्तर पर आई। प्रयोगधर्मी गतिविधिक एवं सुनिश्चित विकास, सैनिटाइजेशन की संभावनाओं के मध्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर निहित तत्वों मेंश समरस महिला मानवश के द्वारा स्थिर भाव, स्थाई धारणीयता से सीखने की कार्यनीति को निराकरणीय करने की शिक्षा कहा जा सकता है, अपेक्षाकृत अधिक जागरूक एवं चौतन्य योग, व्यायाम, स्वच्छता, पर्यावरणीय शिक्षा, की सार्थक पहल, पूर्ण मनोयोग से शिक्षा के प्रति समर्पण एवं प्रेम दर्शन की वरीयता प्राप्त आवासीय बालिका शिक्षा की बेहतरीनता के हेतु निम्न सुझाव वर्णित है –

- आवासीय विद्यालयों में रात्रि के समय महिला होमगार्ड से, आपत्तिजनक एवं व्यावहारिक अनुशासन की संभावना में वृद्धि हो पाएगी।
- छात्राओं की प्राथमिक देखभाल हेतु एक सेविका की नियमित उपस्थिति की आवश्यकता पूर्ति से चिकित्सीय एवं आजीविका के जोखिम में कमी होना संभव हो पाएगा।
- पूर्णकालिक शिक्षिकाओं का अतिरिक्त अपेक्षाओं की मनोवृत्ति से उनके व्यक्तिगत जीवन में अनाधिकृत मानव जीवन के मूल्य में विचलन के समाधानार्थ प्रति 12 घंटे के पश्चात स्वतंत्र वार्डन पद का सृजन किया जाना चाहिए।
- अवसंरचनात्मक संरक्षण एवं नियमित सफाई कर्मी की नियुक्ति हो।
- प्रमुख एवं गौण विषय के पूर्ण शिक्षक स्टाफ की अनिवार्यता है।
- माध्यमिक स्तर तक शिक्षा एवं छात्रावास का उच्चारण कक्षा (6 से 12 तक)अनिवार्यता है।
- आवासीय कक्षा का विभक्तीकरण प्रत्येक कक्ष में मात्र चार छात्राएं हो, जिससे बाधा रहित स्वाध्याय संभव हो पाए।
- छात्राओं की भावात्मक सुरक्षा के हेतु एक अतिरिक्त कक्ष जिसमें अभिभावक अनन्य आपातीय स्थिति में आवास कर सके।
- नियमित संगीत शिक्षिका की अनिवार्यता है, जो विद्यालय वातावरण को दिव्यानुभूति प्रदान कर सके।
- संस्कृत भाषा को मुख्य भाषा धारा में लाने हेतु ँ(ज्ै) विशिष्ट प्रयास आवश्यक है।
- शिक्षा हेतु उदाकृत सोच से उचित कार्यों की सिद्धी होगी।
- छात्रों की समाज में उचित सहभागिता से कार्यक्रमों के माध्यमो में वृद्धि करना।
- छात्रों की नेतृत्वकारी भूमिका में प्रयुक्त पद दायित्व प्रदान करना श्रम एवं गरिमा का रक्षक होगा।
- संबंधित किए जाने योग्य छात्रवृत्ति एवं अन्य योजना के लाभ की संपूर्ण सूचना से अवगत कराया जाना चाहिए।

- प्रशिक्षणीय प्रौद्योगिकी के उचित रखरखाव हेतु बाधारहित सेवा प्रदान की जानी चाहिए।

पूर्व माध्यमिक आवासीय बालिका का आत्मिक लक्ष्य है– जड़ प्रकृति में शिक्षा की ललक, रुचि, तड़प, जागृत करके भावी जीवन की दिनचर्या में शिक्षा को श एक सोच के रूपश में विकसित एवं संवर्धन प्रदान करना। जिसकी क्रियाविधि छात्र जीवनपर्यंत करती रहे, अथक् परिश्रम बाधा रहितबाधा निवारक शिक्षा का आनंद प्राप्त होता रहे और ऐसी वेद रीति का सार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दृष्टव्य है।

संदर्भ –

1. संस्कार विधि रू दयानंद सरस्वतिकृति

2. शुक्ला वैष्णवी (शोधार्थी) का मत

3. द कारवां जनरल्स ए पॉलीटिकल एंड कल्चर

4.बी.बी .बी.पी. योजना 22 जनवरी 2015 (हरियाणा)

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रूएक मसौदा पृष्ठ 108

6. सर्वेक्षण, के. जी.वी .वीं.कुंडा सत्र 2024 – 25 (सितंबर)

7. सरस्वती दयानंद वेदांत कृत वेदअमृत पृष्ठ संख्या 115

8. प्रेरणा पोर्टल के.जी.बी.वी . शै

9. राम प्यारे सिंह

10.के.जी.बी.वी . कुंडा प्रतापगढ़ की कक्षा 8 की छात्राओं के सुझाव।